RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-05
May-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में माध्यमिक स्तर के विधार्थियों की पर्यावरण जागरूकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन

[1]ह्रदेश कुमार शर्मा; [2]डा0 आर0 आर0 सिंह

[1]शोध छात्र
[2]निर्देशक

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 15 May 2019

Keywords
शहरी ग्रामीण पर्यावरण जागरूकता

ABSTRACT

सृष्टि के आरम्भ से लेकर आज तक मनुष्य का अपने पर्यावरण से अति घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। प्रकृति प्रदत्त उपहारों से मनुष्य ने सदा ही अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति की है। प्रकृति पर निर्भर मनुष्य ने अपनी स्वाभाविक जिज्ञासाओं के समाधान और अधिकाधिक सुविधापूर्ण जीवन–प्राप्ति की लालसा के वीभूत अनेकानेक वैज्ञानिक अविष्कार किये।आज विश्व के कोने–कोने से पर्यावरण के प्रति चिन्ता की जो आवाज उठ रही है। वह हमारे ऋषि मुनियों ने वैदिक काल में ही दे दी थी, क्योंकि वे पृथ्वी की धरती माँ मानते हुए उसकी सुरक्षा करने, उसको संवारने, वन्य जीव जन्तुओं आदि की रक्षा करने के प्रति सदैव सजग थे। हमारे ऋषि मुनियों ने वेदों की ऋचाओं का सृजन प्रकृति की गोद में ही किया था। महर्षि कपिल, कश्यप और पाराशर जैसे मुनिगण ने पर्यावरण को जन आन्दोलन के रूप में लिया था

अर्थात् वनों को पुत्रवत् मानकर उनकी रक्षा के लिए सदैव तत्पर बाल्मीकि चेतावनी देते हैं कि जो भी मेरे वन के पत्र एवं अंकुर का विनाश और फल फूल का अभाव करेंगें, वे निश्चित रूप से शाप के भागी होंगें। पर्यावरण को संरक्षित रखने के लिए प्रकृति तथा मानव का उचित समीकरण बहुत आवश्यक है।

अर्थात् मानव अपनी इच्छाओं को वश में रखकर प्रकृति से इतना ही ग्रहण करे कि उसकी पूर्णता को क्षति न पहुँचे। डॉ0 बी0 डूस ने भी चेतावनी देते हुए कहा है कि '1990–2020' के बीच हर रोज 50 जीव और पादप प्रजातियाँ समाप्त होती जायेंगी। अगर वनों के कटाव और औद्योगिक गैसों से उत्पन्न तापक्रम वृद्धि पर नियन्त्रण न हो पाया तो भयंकर परिणाम होंगें।

प्रस्तावनाः–

भारतीय जीवन संस्कृति और पर्यावरण के अत्यन्त गहरे सम्बंध रहे हैं। भारतीय जीवन पद्वति का मूल्य आधार प्रकृति एवं उसके द्वारा निर्मित पर्यावरण रहा है। इसी संस्कृति में पवित्र धरा जो धन्य धान्य से परिपूर्ण करने वाली जीवन दात्री के रूप में उसे माँ जैसा सम्मान दिया गया है।

पीपल का पेड़ जिसे वातावरण के द्वारा सर्वाधिक ऑक्सीजन प्रदान की जाती है। उसकी पूजा करने तथा पत्तियों को न तोड़ने को केवल धार्मिक आस्था तक न होकर वैज्ञानिकों कीशोधों का परिणाम है। वायु शोधक तुलसी की पत्ती के बिना भोजन न करना भी वैज्ञानिक विचारों की परिणति स्वरूप का ही आरम्भ है। प्रकृति के विनम्र साहचर्य की यह समृद्व आस्था वर्तमान समय में टूट रही है। प्रकृति तथा जीवन संस्कृति दोनों को एक–दूसरे के सामने दो ध्रुवों पर ला खड़ा किया है। विभिन्न विकृतियों ने दोनों को दूर दूर रहने के लिए विवष कर दिया है। इसलिए (पृथ्वी) माटी से व्यक्ति की दूरी बढ़ रही है। साथ ही उसकी मन मोहक खुषबू गुम लगने लगी है। बाग बगीचों में चलने वाली शालायें उजड़ गई हैं। शहर कूड़े–कचरे से भरे हैं। जो पर्चावरण में जहर घोल रहे हैं। नदियां सूखती जा रही हैं। साथ ही झील, पोखरों, ताल–तलैये किनारों पर लगे बाग– बगीचे आदि सभी गर्त में समा गये हैं। पर्यावरण का मानव निर्मित कृत्रिमता तथा यांन्त्रिकता ने ऐसे अंधेरे में डालना आरम्भ कर दिया है जिससे प्रकृति की अमूल्य धरोहरों से स्वयं मानव वंचित हो गया है।वास्तव में आज हम अतीत के प्राकृतिक सौन्दर्य से बहुत दूर है। प्रकृति के मनोरम दृष्यों का सुख भी हमसे बहुत दूर है। हमारे चारों ओर की भूमि, हवा, पानी, वन, वन्य जीव, समुद्र एवं प्रकृति द्वारा निर्मित प्रत्येक कण पर्यावरण का अंग है। और इससे हर प्राणी का गहरा संबंध है। लेकिन हमसे भी पुराना सम्बंध पौधों और जानवरों का है क्योंकि इसके बिना हमारी जिन्दगी की गाड़ी चल ही नहीं सकती। आज मानव ने स्वार्थ के लिए पर्यावरण को दूषित कर दिया है। इसी कारण जल, भूमि और हवा तीनों ही अति आवष्यक तत्व इस भौतिक व आर्थिक विकास की दौड़ में दूषित हो चुके हैं।

सुविधा की दृष्टि से सामग्री को निम्न दो भागों में विभाजित किया गया है।

1. भारत में किये गये शोध एवं सम्मेलन
2. विदेषों में किये गये शोध एवं सम्मेलन।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

2.1 भारत में किये गये शोध–

RRIJM 2015, All Rights Reserved

लोक विज्ञान संस्थान (पी0 एस0 आई) देहरादून के वैज्ञानिक **डॉ0 अनिल गौतम (2012)** के द्वारा गाजियाबाद जनपद की हिण्डन नदी पर किए गए षोध में पाया गया कि नदी के पानी में इण्डोसल्फान, लिण्डेन, मोनोक्रोटोफास, क्लोरोफिरियास, थ्रीडोन और साइपरमेथिन आदि खतरनाक कैमिकल बह रहे हैं। इसका मुख्य कारण इण्डस्ट्रीज का गंदा पानी बिना ट्रिटमेंन्ट के नदी में डाला जा रहा है। गंगा यमुना दोआब के बीच इस नदी के किनारे लगभग सौ गांव बसे हैं और इनमें सर्वाधिक गांव मेरठ जिले के हैं। जिन पर कुप्रभाव पड़ रहा है।

शोध के अनुसार, नदी का पानी निचली सतह पर पहुँच गया है और यही पानी पेस्टिसाइडस सब्जियों में भी जा रहा है। **डॉ0 गौतम के मुताबिक,** यदि कोई व्यक्ति एक माह में ऐसी दस किलो सब्जी खाता हैं तो उसके शरीर में इन सब्जियों में इस्तेमाल किये गये रसायनों का 15 – 20 फीसदी हिस्सा पहुँच जाता है।

इस खतरनाक रसायनों के कारण टी0 बी0, कैंसर, एनीमिया, खसरा एवम् अन्य भयानक बीमारियां पनप सकती हैं। इतना ही नहीं यदि इन सब्जियों का लगातार सेवन करने वाले व्यक्ति का दांत किसी स्वस्थ व्यक्ति को लगा जाये तो वह भी बीमारी का षिकार हो सकता है।

2.2 विदेशों में किये गये शोध एवं सम्मेलन।

1. **मेहरा, वी. और कौर, एम. (2012)** द्वारा ''इफैक्टिवनेस ऑफ आउटडोर इन्वायरन्मेण्टल एजूकेशन प्रोग्राम फॉर एन्हेन्सिंग रेस्पॉन्सिबल इन्वायरन्मेण्टल बिहेवियर एमंग फिफ्थ ग्रेड स्टूडेण्ट्स'' शीर्षक से किये गये प्रयोगात्मक अध्ययन का उद्देश्य उच्च, औसत और निम्न बुद्धि के कक्षा–पाँच के विद्यार्थियों के उत्तरदायी पर्यावरणीय व्यवहार को बढ़ाने में वाह्य पर्यावरण–शिक्षा कार्यक्रम की प्रभावशीलता का पता लगाना था। न्यादर्ष के रूप में प्रयोगात्मक तथा नियन्त्रित समूह में 60–60 विद्यार्थियों का चयन किया गया। वाह्य पर्यावरण–शिक्षा हेतु अनुदेशन सामग्री, रेस्पॉन्सिबल इन्वायरन्मेण्टल बिहेवियर टेस्ट, जे. सी. रावेन, जे. एच. कोर्ट एवं जे. रावेन की कलर्ड प्रोग्रेसिव मैट्रिसेज अध्ययन उपकरणों के रूप में प्रयुक्त किये गये। परिणामों से पता चला कि वाह्य पर्यावरण–शिक्षा दिया जाना छोटे बच्चों के लिये उचित है। परिणामों से यह भी पता चला कि वाह्य पर्यावरण–शिक्षा प्राप्त विद्यार्थियों के उत्तरदायी पर्यावरणीय व्यवहार में सार्थक अन्तर विद्यमान था।

2. **नटराजन, पी. और नटेसन, एन. (2004)** द्वारा ''इफैक्ट ऑफ कॉम्पीटेन्सी–बेस्ड टीचिंग ऑफ इन्वायरन्मेण्टल साइन्स थ्रू वीडियो ऑन स्टूडेन्ट्स अटेन्मेण्ट ऐट प्राइमरी लेवल'' शीर्षक से सम्पन्न किये गये प्रयोगात्मक अध्ययन का उद्देश्य कक्षा–पाँच के विद्यार्थियों के लिये वीडियो–कैसेट द्वारा क्षमता–आधारित पर्यावरण–विज्ञान शिक्षण की प्रभावशीलता का अध्ययन करना था। उद्देश्यीय न्यादर्शन विधि द्वारा 86 विद्यार्थी न्यादर्श के रूप में चयनित किये गये। इस प्रयोगात्मक अध्ययन में पूर्व–पष्च परीक्षण समतुल्य समूह अभिकल्प का प्रयोग किया गया। परिणामों से सिद्ध हुआ कि प्रयोगात्मक समूह के पूर्व–पश्च परीक्षणों के निष्पत्ति में सार्थक अन्तर विद्यमान था। प्रयोगात्मक तथा नियन्त्रित समूह के निष्पादन में भी सार्थक अन्तर उपस्थित था।

समस्या कथन

समस्या कथन–(Statement of Problem)-

शोधकार्य में पष्चिमी उत्तर प्रदेष के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया–

शोध कार्य में पश्चिमी उत्तर प्रदेश के सात जिलों का वर्णन किया है। जिनमें से छात्र तीन जिलों का चयन किया जायेगा–

1. हापुड 2. मेरठ 3. गाजियाबाद

शहरी–

शहर उनकों माना गया है जहां कि जनसंख्या 2,00,000 या उससे अधिक है। जहां पयाप्त भौतिक युग की सुविधायें उपलब्ध हैं। उन्होंने इस भौतिक युग में अपने आपको समायोजित कर लिया है।

ग्रामीण–

ग्रामीण उनको माना गया है जिनकी संख्या 20,000 से कम है और जो शहरी क्षेत्रों से दूर हैं। जहां व्यक्ति में तकनीकी ज्ञान का अभाव है। तथा उनके सामाजिक, राजनीतिक रीति–रिवाज परम्पराओं पर आधारित है। ये समाज की मान्य पुरातन परम्पराओं के लिए व्यक्ति को स्वयं की योग्यता, क्षमात, निपुणता व प्रकृति के स्तर का ज्ञान सहायक रहता है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

ष्शोधकर्ता ने अपने शोध कार्य हेतू निम्नलिखित उद्देष्य निर्धारित किये हैं जिसके द्वारा ''पष्चिमी उत्तर प्रदेष के शहरी

RRIJM 2015, All Rights Reserved

एवं ग्रामीण विघार्थियों के पर्यावरण सम्बंधी ज्ञान का अध्ययन किया जायेगा।''

ये इस प्रकार है–

1. शहरी विद्यार्थियों की पर्यावरण सम्बन्धी ज्ञान का अध्ययन करना।
2. ग्रामीण विद्यार्थियों की पर्यावरण सम्बन्धी ज्ञान का अध्ययन करना।
3. शहरी विद्यार्थियों में जल, वायु तथा मिटटी से सम्बन्धित तथ्यात्मक ज्ञान का अध्ययन करना।

इस अध्ययन के आधार पर ये ज्ञात किया जा सकेगा कि पर्यावरण दूषित होने से मानव जीवन पर कितना गहरा प्रभाव पड़ता है जिससे इनमें ये चेतना जागरूक होगी कि पर्यावरण को स्वच्छ रखना कितना अति आवष्यक है।

शोध अध्ययन की परिकल्पनायें

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए निम्नलिखित परिकल्पना की हैं–

1 – माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला वर्ग एवम् विज्ञान वर्ग के विधार्थियों कों पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

2 – माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवम् शहरी छात्रो में पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध का सीमांकन

प्रत्येक अनुसंधानकर्ता की कुछ परिसीमांए होती हैं जिन्हें दृष्टिगत रखते हुए वह कार्य करता है किसी शोधकर्ता के लिए आवष्यक नहीं है कि वह समस्या का विस्तृत रूप से विवेचन कर सके।

अर्थात समय व साधन को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने समस्याओं को निम्न प्रकार से परिसीमित किया है।

– प्रस्तुतशोध कार्य में केवल पष्चिमी उत्तर प्रदेष के जनपदों में से केवल तीन जनपदों हापुड, मेरठ और गाजियाबाद को सम्मिलित किया गया है।

– प्रस्तुतशोध कार्य में माध्यमिक स्तर के कला एवम् विज्ञान वर्ग के विधार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

– प्रस्तुतशोध कार्य में केवल यू0 पी0 बोर्ड इलाहाबाद के छात्रों को सम्मिलित किया गया है।

अनुसंधान विधि

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का उपयोग करने का निष्चय किया है।ष्शैक्षिक समस्याओं के प्रति सर्वेक्षण विधि सर्वाधिक व्यापक रूप से प्रयुक्त किये जाने वाली विधियों में से एक है।

शोध उपकरण एंव सांख्यिकी

दो प्रकार के उपकरण प्रस्तुत शोधकार्य के उपयोग में लाए जाते हैं।

1. स्वरचित उपकरण
2. प्रामाणिक उपकरण

प्रामाणिक उपकरण डॉ0 प्रवीन कुमार झा द्वारा निर्मित उपयोग में लाया जायेगा। इस उपकरण में पांच क्षेत्र दिए गए हैं जिनमें 51 कथन इस उपकरण की विष्वसनीयता का .74 तथा वैद्यता .83 है। चूंकि यह 14 – 21 वर्श तक के विधार्थियों के लिए उपयुक्त है। इसलिए इसका चयन शोध कार्य हेतु किया जायेगा।

ष्शोध के सम्बंध में विधार्थियों की पर्यावरण चेतना जानने के लिए उपकरण तैयार किए जाऐंगें। जिससे विधार्थियों की पर्यावरण सम्बंधी, अवबोध एवम् आकांक्षा का पता लगाया जा सके।

तालिका न0 1

क्रम संख्या	*t*मान	सार्थक/असार्थक	स्वीकृत/अस्वीकृत
1.	1.229	असार्थक	अस्वीकृत
2.	2.15	असार्थक	अस्वीकृत
3.	3.841	सार्थक	स्वीकृत
4.	3.258	सार्थक	स्वीकृत
5.	3.408	सार्थक	स्वीकृत
6.	1.342	असार्थक	अस्वीकृत
7.	0.978	असार्थक	अस्वीकृत
8.	4.339	सार्थक	स्वीकृत
9	1.291	असार्थक	अस्वीकृत
10..	1.291	असार्थक	अस्वीकृत
11.	2.282	असार्थक	अस्वीकृत
12.	1.754	असार्थक	अस्वीकृत
13.	5.292	सार्थक	स्वीकृत
14.	4.983	सार्थक	स्वीकृत
15.	4.152	सार्थक	स्वीकृत
16.	1.134	असार्थक	अस्वीकृत
17.	1.088	असार्थक	अस्वीकृत
18.	2.07	असार्थक	अस्वीकृत
19.	5.398	सार्थक	स्वीकृत
20.	3.993	सार्थक	स्वीकृत
21.	3.262	सार्थक	स्वीकृत

RRIJM 2015, All Rights Reserved

क्रम संख्या	*t*मान	सार्थक / असार्थक	स्वीकृत / अस्वीकृत
22.	3.426	सार्थक	स्वीकृत
23.	1.957	असार्थक	अस्वीकृत
24.	1.213	असार्थक	अस्वीकृत
25.	5.152	सार्थक	स्वीकृत
26.	2.000	असार्थक	अस्वीकृत
27.	1.648	असार्थक	अस्वीकृत
28.	3.479	सार्थक	स्वीकृत
29.	0.889	असार्थक	अस्वीकृत
30.	3.953	सार्थक	स्वीकृत
31.	1.614	असार्थक	अस्वीकृत
32.	4.716	सार्थक	स्वीकृत
33.	1.470	असार्थक	अस्वीकृत
34.	1.614	असार्थक	अस्वीकृत
35.	5.514	सार्थक	स्वीकृत
36.	2.282	असार्थक	अस्वीकृत
37.	6.249	सार्थक	स्वीकृत
38.	6.847	सार्थक	स्वीकृत
39.	1.7275	असार्थक	अस्वीकृत
40.	2.369	असार्थक	अस्वीकृत

3.6.2.3. अन्तिम प्रारूप का निर्माण –

प्रारम्भ में मापनी हेतु 40 कथनों का निर्माण किया गया और प्रत्येक कथन के लिये ज अनुपात की गणना की गयी। अन्तिम रूप से सार्थक *t*मान वाले कथन चयनित किये गये। क्योंकि उच्च तथा निम्न समूह में 11–11 व्यक्ति सम्मिलित किये गये हैं अतः यहाँ कत्रि20 है। कत्रि20 के लिये सार्थकता के .01 स्तर पर उन्हीं *t*मानों सार्थक माना जाता है जिनके लिये ज अनुपात का मान 2.53 से अधिक हो। अतः मापनी के अन्तिम प्रारूप के लिये उन्हीं कथनों को चयनित किया गया जिनके लिये ज अनुपात का मान 2.53 से अधिक है। इस प्रकार 18 कथन मापनी में अन्तिम रूप से शामिल किये गये जिनमें 9 कथन धनात्मक तथा 9 कथन ऋणात्मक थे और मापनी का अन्तिम प्रारूप तैयार कर लिया गया

Reference

1. Barker, R. G. (1969). Wanted : An ***eco-behavioural science. In E.P. Willems & H.L. Raush (Ed.) Naturalistic viewpoints in Psychological Research.*** New York, Holt, Rinehart & Winston.
2. Buch M.B. (Ed) (1979) ***"Second Survey of Research in Education*** 1972 – 78.
3. Finnish National Commission for UNESCO 1974. ***Report of the Seminar on Environmental Education. Jammi.***
4. Anandlakshmy, S. and Bajaj, M. (1981). ***Childhood in the Weavers' Community in Varansi: Socialization for adult roles.*** In D. Sinha (Ed.) Socialization of the Indian Child. New Delhi.
5. Shahnawaj. 1990. ***Environmental awareness and environmental attitude of secondary and higher secondary school teachers and students.*** Ph. D., Education, University of Rajasthan.
6. Gopalakrishnan, Sarojini. 1992. ***Impact of environmental education and the primary school children.***
7. Kidwai Zeenat, 1991. ***Development of an environmentally oriented curriculum in geography at secondary stage.*** (Indian Educational Review, Vol. 26(3), 87-94.
8. Khoshoo, T.N. (1995). Mahatma Gandhi :***An apostle human ecology.*** Tata Energy Research Institute, New Delhi.
9. N.C.E.R.T. (1997) :***"Fifth Survey of Educational Research***- 1988-92 Volume (I).

RRIJM 2015, All Rights Reserved